यह पुस्तक

'शैदी' हिन्दी के तरुण कवि (शायर) हैं। प्रस्तुत पुस्तक में उनकी हालावादी १०१ रुबाइयाँ संकलित की गई हैं।

*

रस, रूप, रंग, यौवन, प्रणय, मस्ती और लड़खड़ाहट से भरपूर यह संकलन आपको अवश्य ही पसन्द आयेगा।

*

छलकती हुई विविधि रुबाइयों का यह उत्कृष्ट संकलन है। इसका नशा, दर्द और खुमारी, आप कभी नहीं भूलेंगे।

●

मयख़ाना

ब्रजकिशोर शर्मा कुमुद

आ ग रा-२

प्रगति पुस्तक माला-७७

सम्पादक :

रामगोपाल परदेसी

पॉकेट बुक्स

मूल्य एक रुपया

लाइब्रेरी संस्करण

दो रुपये पचास पैसे

प्रकाशक:

प्रगति पॉकिट बुक्स, घटिया आजमखां, आगरा-३

MAYKHANA : Poetry by SHAIDI

'मधुशाला' के अमर गायक

आदरणीय बच्चन को

जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी

और

मयख़ाना की मधुर साक़ी

हेमलता को

जिसने मुझे गहरा नशा दिया

—शैदी

अपनी बात

एक मुद्दत हुई, जब मैंने शायरी की इब्तिदा (प्रारम्भ) ही की थी, तक़रीबन ६-७ साल पहले! उर्दू-शाइरी की लताफ़त और-ज़ुबानी का मैं कायल हो चुका था। चुनाचे, जो कुछ पढ़ने को मिला, वह पढ़ा और जो सुनने में आया, उस पर भी कान दिये। इसी दौरान मयकशी के मजमून पर छिट-पुट अशआर और ग़ज़लियात से लेकर ग़ालिब और हाली जैसे अज़ीमो-मक़बूल शायर और उमर खैयाम तक बहुत कुछ सुना-समझा। मुतास्सिर (प्रभावित) होना लाज़िम था। दिल में जज़्बात भड़कने लगे। मगर सही रास्ता न मिलने से यह तूफान ज्वालामुखी की तरह अन्दर ही अन्दर उबलता रहा। अब आप इसे संयोग कहिये या फिर मेरा नसीब कि हिन्दी के मशहूर और मेरे मुहतरिम (आदरणीय) कवि डा० बच्चन की "मधुशाला" से मेरा इत्तफ़ाक हुआ। यूं इसका थोड़ा हिस्सा मैं उनके तरन्नुम में पहले भी सुन चुका था। मज़ामीन के साथ ही साथ बह्र भी काफ़ी पसन्द आई।

सही बह्र मिल जाने से जज़्बात-निगारी (भाव-प्रदर्शन) का रास्ता साफ़ हो गया। चुनांचे, एक नशे की लहर मेरे मन में भी दौड़ी और उसमें जो रंग सामने आये, जो गुल खिले, वे आपके दस्ते-मुबारक में हाज़िर हैं।

उड़ती नज़र से देखने पर यह ग़लतफ़हमी हो सकती है कि यह "मधुशाला" का उर्दू तर्जुमा है या फिर उसी की ज्यों की त्यों नक़ल है। लेकिन, हक़ीक़त यह है कि इसे लिखते वक्त ये सब बातें मेरे दिमाग़ में थीं और हर मुमकिन कोशिश से मैंने

खुद को इस इल्ज़ाम से दूर ही रखना चाहा। वैसे अगर ग़ौर किया जाये तो शायरी ब-ज़ात-खुद चन्द रूपकों पर ही मुन्हसिर (निर्भर) रही। एक ही रूपक पर लाखों शेर कहे गये, जैसे गिने-चुने रंगों से ही बेशुमार मुख़्तलिफ़ तस्वीरें बन जाती हैं।

जहाँ तक बहर (छन्द) का तअल्लुक है, एक-एक बहर पर कई-कई शायरों ने सुख़नगोई की है। रहा सवाल मफ़हूम का, सो जैसे एक रामायण की कहानी पर मुख़्तलिफ़ (विभिन्न) शायरों ने अपने-अपने अन्दाज़ से रोशनी डाली है, अपनी-अपनी ज़ुबान और तर्ज़-बयानी में उसे पेश किया है, उसी तरह "मधुशाला" और इस किताब का मौज़ू (विषय) एक कहा जा सकता है। मैंने ज़ुबान को सादा और आम-फ़हम बनाने का काफी ख़याल रखा है, मगर जहाँ कहीं कुछ सख़्त अल्फ़ाज आ गये हैं उसकी एक वज़ह तो सही और मौज लफ्ज लाने की मजबूरी है और दूसरी अपने मुहतरिम डा० "राज़" की इस्लाह का नतीजा है।

आखिर में, सबसे पहले मैं अपने मुअज़्ज़िज़, बुज़ुर्गवार उस्ताद डा० "राज़" इगलासी को अपना ख़िराजे-अक़ीदत पेश करूँगा, जिनकी इस्लाह (परामर्श) से मेरे क़लाम में बहुत कुछ सफ़ाई आई है। "मयख़ाना" आपके हाथ में है। इसके बारे में आपकी राय जानकर मुझे निहायत ख़ुशी होगी और मौज़ू इस्लाह (उचित परामर्श) का मैं ख़ैरमक़दम (स्वागत) करूँगा।

पक्की सराय, अलीगढ़ (उ.प्र.) —शैदी

मयख़ाना

हुआ मुजस्सिम[1] मिरा तसव्वुर[2]
बनकर साक़ी[3] – मस्ताना;
बादए-फ़िक्रो-सुख़न[4] भरी है,
बना तखैयुल[5] पमाना[6] ।
जिसे सिर्फ़ पढ़ने से ही
हो जायेंगे मसरूर[7] सभी,
पेशे – खि़दमत[8] करने लाया
वही किताबे—"मयख़ाना"[9]॥

---

१. साकार २. कल्पना ३. शराब पिलाने वाला ४. चिंतन और काव्यरूपी मदिरा ५. कल्पना ६. शराब का प्याला ७. मदहोश ८. सेवा में प्रस्तुत ९. "मयख़ाना" नाम की पुस्तक ।

बदला करते पीने वाले,
नहीं बदलता पैमाना,
साक़ी एक सभी रिन्दों[1]
को कर देता है मस्ताना।
क्या मुफ़लिस[2] क्या मुनइम[3]
दोनों ही हैं एक यहाँ आकर
फ़र्क अमीरी और ग़रीबी
में न समझता मयख़ाना[4]॥

१. पियक्कड़, २. ग़रीब ३. अमीर ४. शराबखाना।

पड़ मुसीबत तो बन जाता
है अपना भी बेग़ाना[1],
दुनिया भी है रंग बदलती
अब आकर हमने जाना।

जब तक है आराम तभी तक-
के ही सब साथी, लेकिन।

सुख-दुख दोनों ही में रहता
सच्चा साथी मयख़ाना ॥

१. अपरिचित, पराया।

४

भूल खुदा को जाता इन्साँ
और छूटता बुतखाना[1];
रहने वाले मकाँ[2] छूटते,
वतन[3] छूटना भी माना।

दोस्त-अजीज़[4] जिन्दगी भरके,
अक्सर मिले जुदा[5] होते,

छूट नहीं पाता है, लेकिन,
कभी उम्र-भर मयखाना॥

१. मंदिर २. मकान ३. देश ४. मित्र एवं प्रिय सम्बन्धी ५. अलग

नहीं ज़रूरी हर राही[1] को,
मंज़िल अपनी पा जाना;
नहीं जरूरी हर किश्ती[2] की
क़िस्मत में साहिल[3] पाना।
नहीं भरोसा परवाने पहुँचे
महफ़िल में शम्माँ तक,
लेकिन हर पीने वाले को
मिल जाता है मयख़ाना॥

---

१. पथिक २. नौका, नाव ३. किनारा।

बिना बहारों के हर गुलशन[1]
लगता जैसे वीराना,
दिलकश[2] फ़िजा[3] तभी होगी
जब आये सावन मस्ताना।

हुईं मुन्हसिर[4] खुशियाँ सारी
किसी मुकर्रिर[5] मौसम पर;
सदा बहार रहा आता है,
लेकिन मेरा मयखाना॥

---

१. बाग २. चित्ताकर्षक ३. वातावरण ४. निर्भर ५. विशेष।

सिर्फ सुकूने-दिल[1] की ख़ातिर,
बने पुजारी — मौलाना,
या फिर तलबगार[2] बनकर
हो, जाते मस्जिद-बुतख़ाना।

मगर न कुछ हसरत[3] रहती
पीकर दीवानों के दिल में,

और सुकूने-दिल की तो बस,
जगह यही है मयख़ाना॥

१. हृदय की शांति २. इच्छुक ३. इच्छा।

शेख[१] बताते मस्जिद अपनी,
और बिरहमन[२] बुतख़ाना;
मज़हब[३] को लेकर करते हैं
झगड़ा दोनों मनमाना।

एक राम का भक्त, दूसरा
अल्ला: का आशिक़[४], लेकिन

साक़ी एक सभी रिन्दों[५] का,
और एक ही मयख़ाना॥

१. मौलवी २. ब्राह्मण ३. धर्म ४. प्रेमी ५. पियक्कड़।

काफ़ी जगह चाहिये, कोई
अगर बनायें बुतख़ाना,
पैसा उठता, अगर चाहता
कोई मस्जिद बनवाना।

मगर एक-दो जाम[1] और
साक़ी हो अपने साथ अगर,

जहाँ कहीं ले जाकर रख दो,
वहीं सजेगा मयख़ाना॥

---

१. शराब का प्याला (मधु-पात्र)।

रोज बजें नाकूश[1], अज़ानें[2]
देता हर दिन मौलाना;
सदियाँ गुजरीं मगर न रूठे
ईश्वर ने अब तक माना।
मगर कहाँ है सब्र भला
इतना मैख्वारों[3] के दिल में;
हाल रूठता, हाल मान
जाता साक़ी-ए-मयख़ाना[4]॥

१. शंख २. मुसलमानों की प्रार्थना ३. शराबी ४. शराबखाने की साक़ी।

एक मुक़र्रिर वक्त[1] खुला करता
है हर इक बुतख़ाना,
है नमाज का वक्त मुअय्यन[2]
मस्जिद में, ऐ मौलाना।

राम — रहीम मिला करते हैं
खास वक्त पर ही, लेकिन,
साक़ी है मशगूल[3] हर घड़ी,
हर दम खुलता मयख़ाना॥

१. निश्चित समय २. निश्चित ३. व्यस्त।

दुआ न जाने कब पूरी हो—
पायें यह किसने जाना ?
कैसा ईश्वर ? कैसा अल्ला[1] ?
कौन भला यह पहिचाना।
मगर यहाँ हर हसरत[2] पूरी,
हो जाती है साक़ी से,
मन्दिर-मस्जिद बहलाते, पर,
सचमुच देता मयखाना॥

१. ईश्वर २. इच्छा।

झूठी तस्की[१] दे-देकर ही
दिल भरमाता[२] बुतख़ाना[३]
ख़ौफ़े-ख़ुदा[४] देख मस्जिद में
मस्ती भूले मस्ताना।

दर-दर, जगह-जगह पर घूमा,
नहीं मिली तस्कीन[५] मगर;

अमन-चैन[६] को देने वाला
मिला ठिकाना मयख़ाना॥

१. तसल्ली २. भुलावा देना ३. मन्दिर ४. ईश्वर का भय
५. तसल्ली ६. सुख-शान्ति।

ईश्वर को जपते हैं कैसे,
अभी न कोई पहिचाना;
खुदा-खुदा कहने से आख़िर,
जुदा रहेगा पैमाना।
राम-राम कहने के बदले
जाम-जाम[1] कहना सीखो,
जन्नत[2] नहीं मिले, रहने दो,
मिल जायेगा मयख़ाना॥

---

१. शराब का प्याला २. स्वर्ग।

आया क्यों तू मयख़ाने में?
वाइज़[1] किसको समझाना?
रोज यहाँ हर आने वाला,
अपनी धुन का मस्ताना।
जुबाँ न कोई भी है अपनी
और न कोई मज़हब है।
अपना मकाँ-मुहल्ला सब कुछ,
है बस ये ही मयख़ाना॥

---

१. उपदेशक।

किस ग़फ़लत[1] में रहता है
तू ? किसकी ख़ातिर दीवाना?
जन्नत-जन्नत कह कर, वाइज[2]
किसी और को भरमाना।

जो न दिखाई पड़ सकता है,
क्यों हों उसके दीवाने ?

जन्नत जिसको कहते हैं, वो
ख्वाब[3] हक़ीक़त[4] मयख़ाना॥
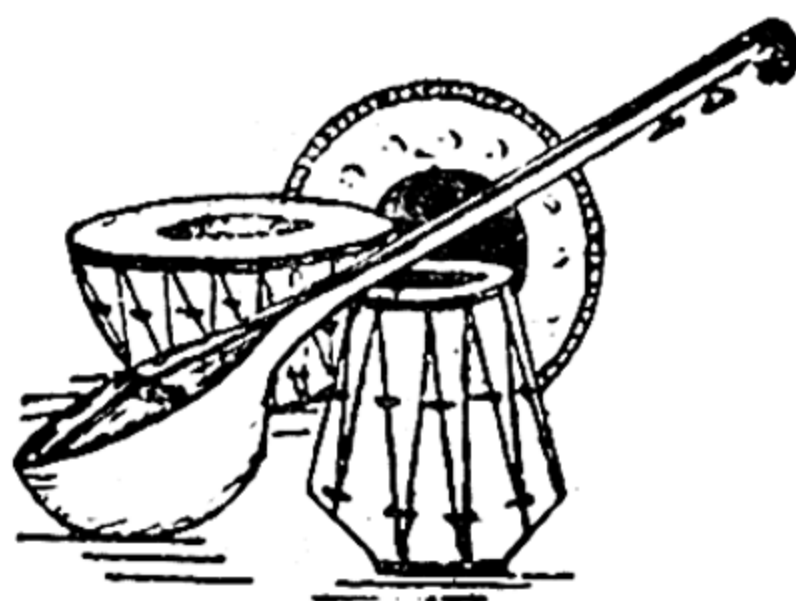
१. भ्रम २. उपदेशक ३. स्वप्न ४. यथार्थ (सत्य)।

जन्नत किसको कहते, तूने
अभी न, ऐ वाइज़ ! जाना;
सबको वहाँ पिलातीं हूरें[1]
बन कर साक़ी मस्ताना।

तू मरने के बाद पियेगा
हम जीते जी भी पीते,

क़ौसर[2] है जन्नत में वो ही,
धरती पर जो मयख़ाना ॥

१. अप्सरायें २. स्वर्ग में कल्पित शराब की नदी।

दिल में इश्क़-हक़ीकी[1] का जब,
छलका करता पैमाना ;
हरदम दिल, साक़िये-ख़ुदा[2] का
रहता है जब दीवाना।

फ़िर मज़हब[3] का जामा[4] पहिने
शेख-बिरहमन हैं पीते ;

लुत्फ़े—जन्नत[5] से पहले है
लेना लुत्फ़े—मयखाना[6] ॥

१. ईश्वरीय प्रेम २. ईश्वर रूपी साक़ी ३. धर्म ४. चोला, वस्त्र
५. स्वर्गिक आनन्द ६. शराबखाने का आनन्द।

मेरी आँखों में हरदम ही
घूमा करता पैमाना,
हरदम दिल में साक़ी रहता,
हरदम मैं हूँ दीवाना।
वाइज़! अब तू ही बतलादे,
तर्के-मय[1] कर दूँ कैसे?
दुनिया की हर शै[2] में, ही जब
देख रहा हूँ मयख़ाना॥

१. शराब का त्याग २. वस्तु।

किसने बहका दिया तुझे ?
ऐ ज़ाहिद[१]! मय[२] से इतराना;
कभी बैठ दीवानों के संग,
कभी उठा तो पैमाना।

कभी बैठ कर देख ज़रा
मेरे साक़ी के पहलू[३] में;

तभी समझ पायेगा, प्यारे !
क्या है लुत्फ़ — मयख़ाना॥

१. शराब से परहेज करने वाला २. मदिरा ३. बगल में, पास में।

वाइज़ ! लगा रखा है तूने.
कैसा कहना — समझाना,
तू भी शामिल होजा ले-ले
साक़ी से इक पैमाना।
पीकर इसको फिर देखेंगे,
क्या कहता है तू हमसे,
नाम बदल कर रखलेंगे, गर
रोज न आये मयख़ाना॥

मन्दिर औ, मस्ज़िद में पंडित
और शेख़ का चिल्लाना,
लगता जैसे साक़ी से कुछ
माँगे कोई दीवाना।

उधर दुआयें माँगें सब तो
इधर आरजूयें[1] दिल में,

किस मन्दिर-मस्जिद से बोलो
कम है मेरा मयख़ाना॥

१. आकांक्षायें।

कुलकुल-कुलकुल मीना[1] करता,
खन-खन बजता पैमाना;
रुनझुन-रुनझुन पायल बजती,
खिल-खिल हंसता दीवाना।

सूना मन्दिर, सूनी मस्जिद,
सूने गिरजे गुरुद्वारे;

लेकिन चहका करती हरदम,
यहाँ महफिल— मयखाना[2]।

१. शराब की बोतल २. शराबखाने की महफ़िल या सभा।

कभी न रुकता दस्ते-साक़ी[१],
और न दौरे — पैमाना[२];
कभी न छोटी हो पाती है,
यहाँ क़तारे — दीवाना[३]।

रहता है खामोश रात भर,
आलम[४] ख़्वाबीदा[५] होकर;

जागा करता लेकिन हरदम,
और हर घड़ी मयख़ाना।

---

१. साक़ी का हाथ २. शराब का दौर (चमत्कार) ३. दीवानों की पंक्ति ४. संसार ५. निद्रित, सोया हुआ।

उधर बहारें गुलशन[1] में हैं,
इधर सजा है पैमाना;
उधर बाग़वाँ[2] है जोरों पर,
इधर साक़िया—मस्ताना।

फूलों की खुशबू से बढ़कर
महक यहाँ मय[3] की फैली,

सैरे-गुलशन[4] करने वालो,
कभी देखना मयख़ाना।

१. बाग़ २. माली ३. मदिरा ४. बाग़ की सैर।

उधर जाम से छलक रही है,
इधर मचलता दीवाना;
और लबों[1] तक आने को
बेताब[2] हो रहा पैमाना।

साक़ी भी पुरजोश[3], पिलाता
जी भर कर, पीते जाओ,

जो जितना भी पिये, लुत्फ़[4]
उतना ही देता मयख़ाना।

१. होंठ २. बेचैन व्यग्र ३. जोशीला ४. आनन्द।

उधर बोतलें लुढ़की फिरतीं,
उधर छलकता पैमाना,
इधर झूमते हैं दीवाने,
उधर शमाँ पर परवाना।

एक तरफ साक़ी की पायल,
एक तरफ साज़े-मस्ती[1],

लगता है यूं जैसे कोई
जश्न[2] मनाता मयखाना।
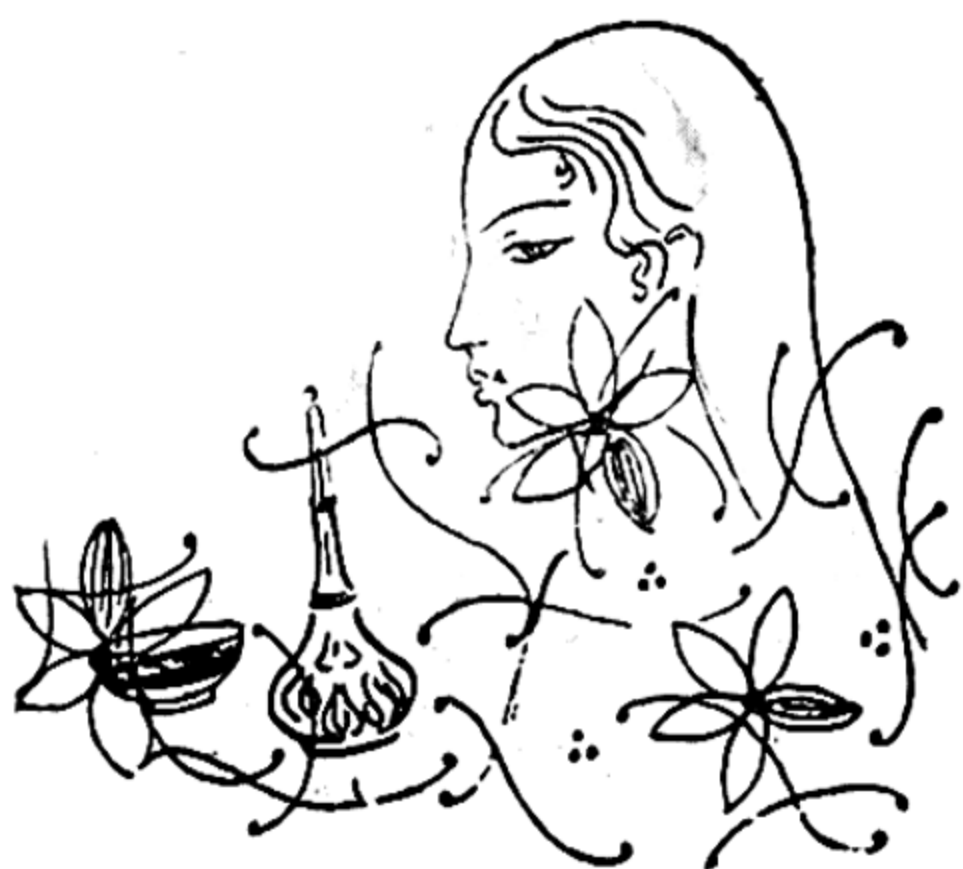
१. आनन्द भरा संगीत, २. उत्सव।

बिछे गलीचे औं कालीनें,
लगीं कतारें — पैमाना[1],
सजा रखी साक़ी ने कैसा,
आज महफ़िल — शाहाना[2]।

पहिन रखीं मयख्वारों[3] ने भी
जरीं[4] खिलअत - ए - शाही[5],

इसी तरह से आदर करता,
हर मैकश[6] का मयख़ाना।

१. मधु-पात्रों की पंक्ति २. शाही महफिल ३. शराब पीने वाले
४. सुनहरी ५. राजसी पोशाक ६. शराब पीने वाला।

मिल-जुल तानें छेड़ रहे हैं,
झूम रहा है दीवाना,
घूम-घूम कर बाँट रहा है
साक़ी सब को पैमाना।
कहीं रक्सफ़र्मा[1] रक्क़ासा[2],
कहीं शोर मस्तानों का,

ग़मे—जहाँ[3] से दूर, खिलखिला
रहा, मस्त हो मयख़ाना।

१. नृत्य-मग्न २. नर्तकी ३. सांसारिक दुःख।

एक तरफ़ रंगीन बोतलें,
साक़ी, मीना[1], पैमाना;
एक तरफ़ ठुमरियाँ, दादरे,
ग़ज़लें, छुम्माँ, परवाना।

ओ' ख़ुशियों के तालिब[2]! देखो
कभी यहाँ भी आकर तुम.

नई-नई रंगीन महफ़िलें
रोज़ सजाता मयख़ाना।

१. शराब बोतल २. इच्छुक।

मस्त पड़ा है पी-पीकर के
साक़ी से, हर दीवाना;
झनन-झनन-झन पायल बाजे,
नाचे साक़ी -- मस्ताना।

नहीं पता कितनी मय[1] बिखरी
कितने लुढ़क गये प्याले,

एक अजब सी मदहोशी में,
डूबा सारा मयख़ाना।

१. शराब।

लगीं कतारें[1] मैख्वारों[2] की
चलता दौरे - पैमाना,
पहिने हुये लिवासे - ज़री,[3]
फ़बता[4] साक़ी - मस्ताना।
जितनी पीते हैं, उतनी ही
तिश्नालबी[5] बढ़ती जाती,
"और इधर दे, और इधर दे"
गूंज रहा है मयख़ाना॥

१. पंक्तियां २. शराब पीने वाले ३. सुनहरी पोशाक ४. सुन्दर लगता है ५. प्यास।

जबकि आलमे - मदहोशी[1] में
डगमग करता पैमाना;
आँखों में जब रंग[2] उतरता,
लगता आलम[3] दीवाना।

डगमग - डगमग चलकर जब
साक़ी को थाम लिया करते;

लगता तब ज्यों साथ नाचता
घूम - घूम कर मयख़ाना।

१. नशे की हालत २. नशे की लालिमा ३. वातावरण।

रोज़ बोतलें खाली होतीं
रोज छलकता पैमाना ;
रोज बनाया करता साकी
पिला – पिला कर मस्ताना ।

फिर भी तिश्नाकाम[1] रहे
आते हैं बादाकश[2] सारे ;

रोज बुलाने को ही शायद
प्यास बढ़ाता मयखाना ।

१. प्यासे २. शराबी ।

नहीं कोई ग़म अगर टूट
जाता है अपना पैमाना ;
साग़र में, ग़र,[1] मय[2] न रहे
तो भी न कोई है हरजाना[3] ।

पीने को हैं आँखे और
पिलाने को चश्मे – साक़ी[4],

खूब शरावे – हुस्न,[5] बाँटता,
दीवानों को मयखाना ।

१. यदि २. शराब ३. हानि ४. साकी के नेत्र ५. सौन्दर्य रूपी शराब ।

३६

रोज बोतलें टूटा करतीं,
रोज चटकता पैमाना,
और शमां पर जलती आकर
रोज कतारें परवाना[1]।

साक़ी की पायल, दीवानों
के दिल, बिखर – बिखर जाते

इतनी कुर्बानी[2] ले – लेकर
चल पाता है मयख़ाना।

१. पतंगों की पंक्ति २. समर्पण।

नहीं बदल पाया है साक़ी,
जब से जाना - पहिचाना,
वही अदा है, वही हुस्न है,
वही जवाँ[1] है मस्ताना।

लाखों आये, चले गये
दिल में यादे - साकी[2] लेकर,

अब तक है मशहूर, उसी
साक़ी से मेरा मयख़ाना।

१. नौजवान, २. साक़ी की याद।

यों तो पीने को घर पर ही
पीता हर इक दीवाना;
लेकिन मज़ा और ही देता
है साक़ी का पैमाना।

मयख़ाने की शान[1], जान,
बुनियाद, सभी कुछ साक़ी है,

जहाँ कहीं जायेगा साक़ी,
वहीं चलेगा मयख़ाना।

1 इज़्ज़त।

कभी खुमार[1] न आये उसको.
पीले जो ये पैमाना;
मय जिसमें पुरकैफ़ दवामी[2]
रखे सदा जो मस्ताना।
फिर भी होस-हवास रहे आते
क़ायम इसको पी कर
बदमस्ती से दूर हटाकर,
अदब सिखाता मयख़ाना॥

१. नशा उतरने की दशा २. अमर आनन्द वाली।

आज तबीयत भर कर पीलो,
पैमाने पर पैमाना;
पास बिठाकर साथी अपने
प्यार जतालो मनमाना।

लुत्फ़े-मय[1] में आज डुबा दो
गमे-जहाँ[2] जितने भी हों;

किसे पता गर बिछड़ गया तो
मिल पाये कब मयख़ाना॥

१. शराब का आनन्द २. सांसारिक दुःख

पीने वालो जब जाओ तुम
तो मुझसे मिलकर जाना,
कहनी है इक बात जरूरी,
नहीं भुलाना, सुन जाना।

साथ यहाँ पर लेते आना,
जो भी हो मिलने वाला,

महमानों की ख़ातिर, बनता,
मेजबान[1], ये मयख़ाना॥

१. यजमान (अतिथि का स्वागत करने वाला)

देख इधर तू लगता जैसे,
आता कोई दीवाना;
कर अपनी लबरेज़[1] सुराही,
भर ले अपना पैमाना।

रखना ज़रा ख़याल साक़िया,
तिश्नाँ[2] कोई न लौट चले;
मयख़ाने की इज्ज़त तुझ से
तेरी इज्ज़त मयख़ाना॥

१. पूर्ण रूप से भरी हुई, २. प्यासा।

साकी ! वह जो बैठा, उसके
हाथों में दे पैमाना;
नया-नया है बदाकश[1]
दस्तूरे-महफिल[2] सिखलाना।
कमी न रहने पाये कुछ भी,
मेहमानों की खातिर में,
एक बार जो आकर कोई,
कभी न भूले मयखाना।

१. शराब पीने वाले २. महफिल के रीति-रिवाज अथवा आचरण।

गूँज रहे तेरे ही नग्मे
हर दिल तेरा दीवाना,
साक़ी ! तू ही बढ़ा रहा है
यहाँ रौनके-मयख़ाना[१] ।

एक फ़क़त[२] तेरे ही दम से,
हुये यहाँ जल्वे रोशन[३],

सच पूछे तो साक़ी ! तू ही
रूह[४], जिस्म[५] है मयख़ाना ॥

१. शराबखाने का सौन्दर्य २. केवल ३. प्रकाशमान ४. आत्मा ५. शरीर ।

रुख़सत कर दे मयख़ाने से,
रहे न कोई दीवाना;
फिर तू जाकर ले आ साक़ी,
साग़र, मीना, पैमाना।
तन्हा[१] होकर मुझे पिलादे
जी भर कर अपनी बादा[२],

जन्म-जन्म भर याद रखूंगा,
साक़ी तेरा मयख़ाना॥
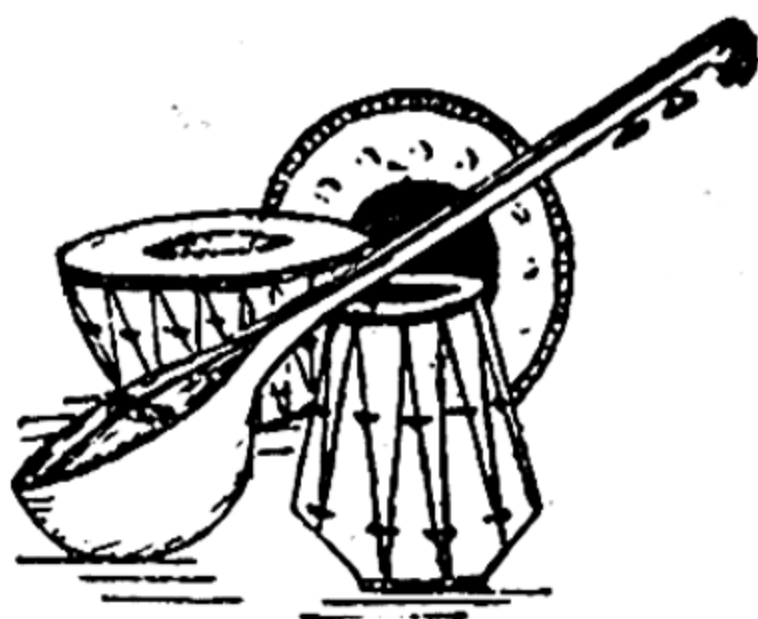
१. अकेला २. मदिरा।

बड़ी शान से आया, साक़ी !
सजधज तेरा दीवाना,
आज पियेगा तेरे हाथों से
भर-भर कर पैमाना।

तुझको भी है कसम न रुकने
पाये दस्ते--अमल[1] तेरा,

इम्तिहान दोनों का ही, ले
रहा आज यह मयख़ाना॥

१. कार्यरत हाथ।

हैराँ[1] मत हो देख साक़िया !
फ़ितरत[2] मेरी रिन्दाना[3];
ख़ाली करदे सुबू[4]-सुराही,
भरता जा यह पैमाना।

रोज नहीं घिरते हैं बादल,
रोज न ये मौसम आता;

आज दिखादे फ़ैयाज़ी[5] तू,
और लुटादे मयख़ाना ॥

१. आश्चर्यचकित २. स्वभाव, प्रकृति ३. शराबियों जैसी ४. शराब का घड़ा ५. उदारता।

महफ़िल में शम्माँ रौशन[1] है,
जलने को है परवाना,
शवे-सियाह[2] बरसता पानी,
मैं हूँ तनहा[3] दीवाना।
ऐसे में आजा, ऐ साक़ी,
लेकर जामो—पैमाने[4],
एक तरफ़ बरसात, दूसरी
तरफ़ रहेगा मयख़ाना॥

१. प्रकाशित २. अंधेरी रात्रि ३. अकेला ४. मधु-पात्र।

एक-एक कर करता जा तू
खाली अपना पैमाना,
मस्ती में आ, मिलजा साक़ी।
कैसा मुझसे शरमाना ?
तुझे आज़मा रहा कि तू भी
आकर मुझे आज़मा ले,
"था कोई पीने वाला" यह,
याद रखेगा मयख़ाना॥

देर न कर तू, भरदे साक़ी।
मेरा खाली पैमाना;
उठा-उठा यह मीना[1] अपनी,
बना-बना झट मस्ताता।

ज़बाँ खुश्क है, लब[2] अफसुर्दा[3]
दिल भी अब बेताब हुआ;

मये-अहमरी[4] छलक रही है,
महक रहा है मयख़ाना॥

१. शराब की बोतल २. होंठ ३. मुर्झाये हुये ४. सुर्ख रंग की शराब।

५१

देख इधर हम भी बैठे हैं
लिये हाथ में पैमाना;
बच-बचकर क्यों चलता साक़ी।
क्या तूने दिल में ठाना ?

नाज और अन्दाज साक़िया,
जितने चाहे दिखलाले;

नहीं छोड़ने वाले हैं हम,
कभी उम्र-भर मयख़ाना ॥

अभी - अभी मैं पीकर लौटा
मगर नहीं दिल ने माना;
फिर से मेरे हाथों में
आ गया छलकता पैमाना।

फिर मेरी गर्दन में साक़ी
ने अपनी बांहें डालीं;

बार - बार लौटा लेता है
वापस मुझको मयख़ाना॥

५३

नहीं उठाता फिर भी हाथों
में आ जाता पैमाना;
खुद ही मेरे पास चला
आता है साक़ी-मस्ताना

बचने को हर बार रास्ते
बदल-बदल कर चलता हूँ,

आगे फिर भी आ जाता है
पास बुलाता मयख़ाना ॥

५४

लाख मर्तबा[1] तौबा[2] की है,
मगर नहीं दिल ने माना;
सारी कसमें टूट गईं पर
छूट न पाया पैमाना।

रूठी हुई दुल्हन ज्यों आखिर,
बात मान ही जाती है।

यूँ ही तौबा ठुकराकर
हर बार पहुँचता मयखाना॥

१. बार, २. शराब न पीने की प्रतिज्ञा

जी में आता है पानी के
बदले भी लूँ पैमाना
राम-रहीम छोड़ साक़ी का
बनूं मुकम्मल[1] दीवाना।

पंडित और शेख़ दोनों ही,
शक़[2] पैदा करते दिल में,

मन्दिर – मस्जिद के झगड़ों से
दूर बना लूँ मयख़ाना॥

---

१. पूर्णरूप से २. सन्देह।

मेरी हस्ती का हर लम्हा
करता मुझको मस्ताना
और गले में उतरा करता
साथ नफ़स[1] के पैमाना।

मेरी तिश्नालबी[2] देखकर
हैराँ[3] हैं रिन्दो[4]-साक़ी,

मेरे रोम-रोम में अब तो,
बसा हुआ है मयख़ाना॥

---

१. सांस २. प्यास ३. आश्चर्य-चकित ४. पियक्कड़।

जो भी चीज़ उठाता हाथों
में लगती है पैमाना
जो भी आता आँखों के
आगे लगता है दीवाना।

हर गुलरू[1] साक़ी सा लगता
मेरे इस वहशी[2] दिल को

सू-ए-बुतख़ाना[3] जाता पर
पहुँचा करता मयख़ाना॥

१. फूल जैसे मुख वाला, सुन्दर २. पागल ३. मंदिर की ओर।

तीरथ-व्रत, पूजा-नमाज़ को
नहीं मानता दीवाना
दरे-मैकदा[1] पर सज्दे[2] हों
बुत[3] है साक़ी-मस्ताना

पीरे-मुग़ाँ[4] मुअज़्ज़न[5], पैमाने
में आबे-पाक[6] भरा,

मधुशाला है मस्जिद मेरी
मन्दिर मेरा मयखाना ॥

१. शराबख़ाने का द्वार २. दंडवत् ३. मूर्ति ४. शराबख़ाने का बूढ़ा प्रबन्धक ५. मौलवी ६. पवित्र-जल (जो मस्जिद में रहता है)।

बूंद बूंद कर धीरे धीरे
भर पाया यह पैमाना,
रश्के-जिनाँ[1] सजी है महफ़िल,
औ' साक़ी है मस्ताना।

देखें कौन पियेगा कितनी,
आज शराबे-कुहन[2] यहाँ,

इम्तहान ले रहा सभी का
मयनोशी[3] का मयख़ाना॥

१. स्वर्ग जिससे ईर्ष्या करे (इतनी सुन्दर) २. पुरानी शराब
३. शराब पीने की आदत।

मेरे तनिक-तनिक[१] से हाथों
में न समाता पैमाना,
कितनी पीना वाजिब[२] है ये
अभी नहीं मैंने जाना।

अभी तअज्जुब[३] क्यों करते हो?
अभी लड़कपन है मेरा,
ज़रा जवानी तो आने दो
चहक उठेगा मयख़ाना॥

१. छोटे-छोटे २. उचित ३, आश्चर्य।

कभी न खाली हो सकता है
साक़ी मेरा पैमाना;
आये कभी ख़ुमार[१] न जिसको
मैं वो रिन्दे—मस्ताना[२]।
मैं कितना पीने वाला हूँ
कोई नहीं समझ पाया;
हर कोई क्या जान सकेगा,
मेरा राज़े — मयख़ाना[३]॥

१. नशा उतरने की हालत २. मस्त पियक्कड़ ३. शराबख़ाने का भेद।

रहता है लबरेज़[1] हर घड़ी,
मेरे आगे पैमाना,
नहीं फ़िक्र अहले-दुनिया की[2],
रहता हरदम दीवाना।

जाम किसी का, सुबू[3] किसी का
लेकिन साक़ी है मेरा,

फ़क्र[4] मुझे है मयख़ाने पर,
मुझ पर नाज़ों[5] मयख़ाना॥

१. पूरा भरा हुआ २. दुनिया वालों की ३. शराब का मटका
४. घमन्ड ५. अभिमानी, गर्वित।

मैं साक़ी की शोख़[1] अदाओं,
का मुद्दत से दीवाना,
शादी में फिर महक उठेगा
नये सिरे से पैमाना।

भट्टी[2] के ही चक्कर लेकर
पड़वाऊंगा भाँवर[3] में

पीने वाले बाराती,
ससुराल बनेगी, मयख़ाना॥

१. चंचल २. जिस पर शराब खींची जाती है ३. हिन्दुओं में शादी के समय अग्नि के चारों ओर लगने वाले सात फेरे।

चुस्की ले-ले करता हूँ मैं
खाली अपना पैमाना
भर-भर आँख निहारा करता
हुस्ने—साक़ी — मस्ताना[१] ।

और नहीं कुछ तो बैठा ही
रहता हूँ मदहोशी[२] में,

दिन से रात, रात से दिन हो,
ताकि न छूटे मयख़ाना ॥

१. मस्त साक़ी का सौन्दर्य २. नशे की हालत ।

मेरा वही अज़ीज़[1] कि जिसके
हाथों में हो पैमाना,
मेरे हमदम[2] बनना चाहो
तो महफ़िल में आ जाना।

मुझको है इमदाद[3] बहुत यह
कमी न मय[4] की रहे मुझे,

दुआ मुझे, ग़र, दो तो कहना-
"रहे मुबारक मयख़ाना॥"

१. प्रिय २. साथी ३. सहायता ४. मदिरा।

कोई शोहरत[1] चाह रहा,
कोई दौलत का दीवाना,
ख्वाहिश[2] रखता दिल में कोई
मरने पर जन्नत पाना।
वस्ले-यार[3] मांगता कोई,
तलबगार[4] हैं सब, लेकिन
मेरा दाता! मुझसे पूछे,
तो मैं माँगू मयखाना॥

१. प्रसिद्ध, ख्याति २. इच्छा, अभिलाषा ३. प्रियतम का मिलन
४. इच्छुक, आकांक्षी।

नहीं चाहिये दौलत मुझको
और न ताजे—सुल्ताना[1],
लाज़िम नहीं सोहबते-वाइज[2]
और न बज़्में—शाहाना[3]।
जिसे काम हो साक़ी से,
साग़र से, ख़ुम[4]-पैमाने से,
उसको भला चाहिये क्या फिर,
दुनिया में, जुज़[5] मयख़ाना ॥

१. शाही ताज २. सत्संग ३. शाही महफ़िल ४. शराब का मटका ५. सिवाय।

मैं कितने दिन से आता हूँ,
किसे पता ? किसने जाना ?
मुझे याद, जब यहाँ हुआ,
आग़ाजे—दौरे — पैमाना[1]।

जब साक़ी की नई उम्र थी,
नया हुस्न था, नई अदा,
मुझे याद है वो दिन भी, जब
खुला-खुला था मयखाना ॥

१. शराब के दौर का प्रारम्भ।

लिया बहुत डरते-डरते ही
मैंने पहला पैमाना,
डर था, कहीं न दुनिया कहदे
मुझको क़ाफ़िर दीवाना।

सहम-सहम जाता था साक़ी
की महफ़िल में आते ही,

डरते-डरते ही मैं उस दिन
पहुंच सका था मयख़ाना॥

७०

पहली-पहली बार लगा जब,
मेरे मुंह से पैमाना,
पहली-पहली बार हुआ जब,
मय पीकर मैं मस्ताना।
तभी दिखाकर अदा, बनाया
साक़ी ने मुझको अपना,
तभी बना मैं मयख़ाने का,
मेरा था तब मयख़ाना॥

जाते जाते रोज मुझे पहि-
चान गया था पैमना;
इन्तज़ार करता रहता था,
मेरा, साक़ी — मस्ताना।
दौरे-मय[1] न शुरू होता था
मेरे आने से पहिले,
गोया[2], मेरे ही दम से था
रवां आज तक मयख़ाना॥

---

१. शराब का दौर २. मानो।

कर लेता है बन्द, देखकर
मुझे बिरहमन[1] बुतख़ाना[2],
उधर शेख़जी[3] ने भी मुझको
कभी न चाहा अपनाना।
दुनिया वालों ने भी कोई
नहीं तवज्जो[4] की मुझ पर
ऐसे बुरे वक्त है मेरा
संगी - साथी मयख़ाना॥

1. ब्राह्मण 2. मन्दिर 3. मौलवी 4. ध्यान।

कौसर[1] चाहे मिले न मुझको,
मगर मिलेगा पैमाना;
वाइज़ ! खुदा मिले, नहीं पर
तै, साक़ी का मिल जाना।
जन्नत जाने वालों को है
धरम-करम की बन्दिश[2], पर
कोई कैसा भी हो, सबको
रोज़ बुलाता मयख़ाना॥

१. स्वर्ग में कल्पित शराब की नदी २. बन्धन।

"मैं बेहद पीने वाला हूँ"
बना रखा है अफ़साना;
लेकिन, क्यों पीता हूँ मैं? यह
नहीं किसी ने भी जाना।

मुझको यही इलाज़ मुआफ़िक[1]
मेरी दवा मुफ़ीद[2] यही,

मैं मरीज़ हूँ रंजो-ग़म[3] का
चारागर[4] है मयख़ाना॥

१. उचित २. लाभदायक ३. मुसीबत और दुःख ४. वैद्य।

मये-अश्क[1] से रहता है
लबरेज़[2] हमेशा पैमाना,
आगे जो हो, लगता, आँखों
में हो कोई दीवाना।

सदा तसव्वुर[3] में तस्वीरे-
यार[4] घूमती साक़ी सी,

मेरी आँखों में भी, है आबाद
महफ़िले - मयख़ाना ॥

१. आँसू रूपी शराब २. पूर्ण रूप से भरा ३. कल्पना ४. प्रियतम की छवि।

मै मसरूर[1] रहा आता, गो
नहीं बज़ाहिर[2] पैमाना,
नहीं पास में साक़ी मेरे
और न कोई दीवाना।

पास न अपने साग़र मीना
जामो-सुबू[3], सुराही हैं,।

सिर्फ तसव्वुर के आलम में[4]
देख रहा हूँ मयख़ाना॥

---

१. नशे की दशा में २. प्रकट रूप में ३. शराब का मटका
४. कल्पना में।

यारो ! सुनो आख़िरी हसरत[1],
तै है मेरा मर जाना;
मयख़ाने के आँगन में ही
क़ब्र खोद कर दफ़नाना।
ताकि देखता रहूँ नज़ारे[2]
साक़ी औ, दीवानों के,
मरने के भी बाद न छूटे,
मुझसे मेरा मयख़ाना॥

१. अभिलाषा २. दृश्य।

दस्ते-साक़ी[1] रुक जायेगा,
सुनकर मेरा उठ जाना;
रोज़ मेरे हिस्से की मय[2] को
छलकर देगा पैमाना।
ले हाथों में ज़ाम[3] मर्सिये[4]
पढ़ा करेंगे दीवाने,
मुद्दत तक सूना-सूना सा,
बना रहेगा मयख़ाना॥

१. साक़ी का हाथ २. शराब ३. मधु-पात्र ४. शोक-गीत
(जो किसी की मृत्यु पर गाया जाता है)

नहीं जलाना मुझको यारो!
और न कोइ दफ़नाना;
कहीं एक वीरान जगह पर,
मेरे शव[1] को ले जाना।
रख देना कुछ सूबू[2] पास में
और एक-दो पैमाने,
ताकि मुसाफ़िर खुश हों पाकर
वीरों का यह मयख़ाना॥

१. लाश २. शराब के मटके।

मय[1] से खींची हुई जमीं पर
यारो ! मुझको दफनाना,
साग़र, मीना, सुबू, सुराही,
साथ कब्र में रख जाना।

मय से भीगे, मस्तानों के
कपड़ों का हो कफ़न मेरा,

मरने के भी बाद रहे,
वाबस्ता[2] जिससे मयखाना॥

---
१. शराब २. सम्बन्धित।

दफ़न किये जाने से पहले
मुझको मय से नहलाना;
कफ़न मुअन्तर[1] करके मय से,
तब मैयत[2] को उठवाना।
साक़ी भी हो साथ, खुशबू-ए-
मय[3] भी फैली हो हर-सू[4],
नहीं जनाज़ा कहना उसको,
बल्कि, जुलूसे - मयख़ाना[5] ॥

१. भीगा हुआ २. अर्थी ३. शराब की सुगंधि ४. हर तरफ
५. शराबखाने का जुलूस।

साक़ी तुम पर जान निसारी[1],
भूल मुझे मत तू जाना,
तनहाई[2] में रोज़ रात को,
मेरी क़ब्र तलक आना।

तिश्ना-रूह[3] मिलेगी मेरी
भर-भर जाम पिला देना,

वीराने में खुला करेगा
रोज़ नया इक मयख़ाना॥

१. न्योछावर की २. एकान्त ३. प्यासी आत्मा।

पीने वालों को मरने पर
एक जगह ही दफ़नाना,
रोज़ रात को चला करेगा
पेहम[1] दौरे— पैमाना।
वीराने में गूँज उठेंगे,
नग़मे पीने वालों के,
क़ब्रिस्तान रहेगा फिर क्यों ?
बन जायेगा मयख़ाना॥

१. लगातार।

काफ़िर[1] है वो, जिसने हाथों
में न लिया हो पैमाना;
जीना उसका ख़ाक़, न जिसने
लुत्फ़ कभी मय का जाना।
जो साक़ी के साथ न बैठा,
वो बिल्कुल बे-लुत्फ़[2] जिया,
तीर्थ-हज्ज सब रहे अधूरे,
अगर न पहुँचा मयख़ाना॥

१. ईमान के विरुद्ध चलने वाला २. आनन्द-रहित।

यूँ तो बाद-ए हस्ती[1] का है
मिला सभी को पैमाना;
मगर, झूमकर पीता कोई,
कोई रहता बेगाना[2]।
मौत जिसे कहते, सच पूछो
तो है नशा इसी मय का,
रवाँ रहा आता है यूँ ही
दुनिया का हर मयख़ाना॥

१. जीवन-रूपी मदिरा २. अपरिचित।

दिल में आहों की आतिश[1] से,
काम मेरा मय खिंचवाना,
गर्दन मेरी बनी सुराही,
और आँख का पैमाना।

साक़ी है ग़म का अफसाना,
जब भी याद उसे करता,

ले आता पुर-अश्क़ जाम दो[2],
ख़ूब लुटाता मयख़ाना॥

१. अग्नि, गर्मी २. आंसू-रूपी शराब से भरे दो प्याले।

पीते हैं हम रोज बादए
रंजो-ग़म[1] का पैमाना;
रोज़ मुसीबत साक़ी बनकर
कर जाती है दीवाना।

नहीं बदमज़ा[2] करती हैं
तल्ख़ियाँ[3], कभी हम रिन्दों[4] को;

तिश्नाकाम[5] बने दिल अपने
और ज़िन्दगी मयख़ाना॥

१. दुख रूपी शराब २. बेस्वाद ३. कड़ुवाहट ४. पियक्कड़
५. प्यासे।

इस धरती की वुसअत[1] को भी
लोगों ने है पहिचाना ;
कहाँ–कहाँ तक आब–हवा[2]
रहती है, सबने ही जाना।
लेकिन, महज़[3] अक्ल वाले ही
राज़[4] समझ सकते इसका,
ला–महदूद[5] हक़ीक़त[6] में है
छोटा सा ये मयख़ाना॥

१. विशालता २. पानी और हवा ३. सिर्फ ४. भेद ५. असीम, अपरिमित ६. वास्तव में।

धरती में है कोई मय से
भरा लबालब तहख़ाना,
वही शराब खींचली अंगूरों
ने, यह किसने जाना ?
जाहिद[1] ! दूर मैक़दे से अब
भाग कहाँ पर जायेगा
जिस धरती पर तू रहता है
वह भी तो है मयख़ाना ॥

---

१. परहेज़गार।

झरने जिनको कहते हैं, वह
तो है मय का छलकाना,
दरिया[१] जो आगे बहता,
लगता, जैसे हो पैमाना।
रंगी-दिलकश[२] बनी फ़िज़ा[३] जो,
लगती है साक़ी जैसी,
परवत[४] लगता, जैसे जंगल
में हो कोई मयख़ाना॥

१. नदी २. रंगीन एवं चित्ताकर्षक ३. वातावरण ४. पहाड़।

महर[1] छिप गया छलकाकर
बाद-ए-अहमर[2] का पैमाना,
सारा आलम[3] मदहोशी[4] में
रहा तासहर[5] दीवाना।
छाई मसरूरी[6] आलम पर,
सरे-ख्वाब[7] साकी आया,
इसी तरह से रोज रवाँ
रहता कुदरत[8] का मयखाना॥

१. सूर्य २. सुर्ख रंग की शराब ३. संसार ४. नशा ५. सुबह तक ६. नशा ७. स्वप्न में ८. प्रकृति।

माहताब[1] बना साक़ी,
है फ़लक[2] महफ़िले-शाहाना[3];
मैकश[4] बन हर इक सितारा
झूमे हो क्या मस्ताना।
मये-चांदनी[5] खूब लुटाता
रात-रात भर सबको ही,
ज़र्रा-ज़र्रा[6] पीने वाला,
बना आस्माँ मयख़ाना॥

१. चन्द्रमा।२. आकाश ३. शाही महफ़िल, ४. शराबी, ५. चांदनी रूपी शराब, ६. कण-कण।

लौ-ए-शमाँ[1] नहीं है ये,
ले रखा शमाँ ने पैमाना,
मैकश बनकर बढ़ता तेजी
से आकर हर परवाना।
नहीं जान तक की भी चिन्ता,
इन रिन्दों को, ऐ वाइज़!
मज़हब के ठेकेदारों[2] को
सबक़[3] सिखाता मयख़ाना॥

१. दीपक की लौ २. धार्मिक घमंड करने वाले ३. पाठ।

भरी शराबे-शबनम[1] जैसी,
फूलों का है पैमाना,
कितना दिलकश[2] शोख़[3]
तितलियों का पी-पीकर इतराना।

हुई मुअ़त्तर[4] फ़िज़ा[5] चमन की,
हर शाखे-गुल[6] झूम रही;

क्या बहार का आलम है ये;
चमन[7] बना है मयख़ाना॥
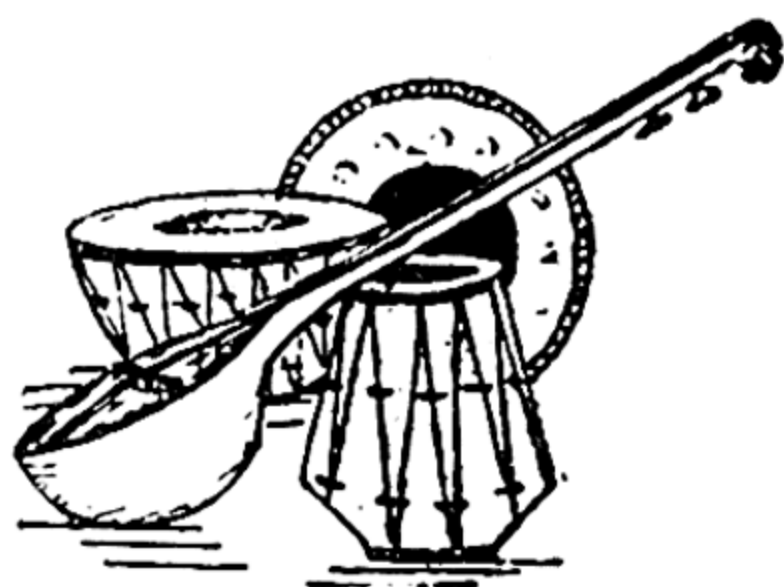
१. ओस रूपी मदिरा २. चित्ताकर्षक ३. चंचल ४. भीगी हुई ५. वातावरण ६. फूलों की डाली ७. बाग़।

बाद-ए-कौमीयत[1] पी-पीकर,
हर इन्सा था मस्ताना,
जंगे-आजादी[2] में कूदे,
गा-गाकर कौमी गाना[3]।

हुए जमअ[4] सब पीने वाले
मज़हब एक हुआ सबका,

कौमी-रहबर[5] ही साकी थे
और वतन[6] था मयखाना॥

१. जाति-प्रेम रूपी मदिरा २. स्वतन्त्रता-संग्राम ३. राष्ट्रीय-गीत ४. इकठ्ठे ५. राष्ट्रीय पथ-प्रदर्शक ६. स्वदेश।

धरती को आकाश पिलाता,
ले बादल का पैमाना;
पीकर जिसको ज़र्रा-ज़र्रा :
झूमे, होकर मस्ताना।
फिर तू बचकर कहाँ रहेगा?
जरा मुझे भी तो बतला,
बना हुआ है जब, ज़ाहिद[1]।
सारा आलम[2] हा मयख़ाना॥

१. परहेजगार २. संसार।

झूठे सारे रिश्ते-नाते,
कहते पंडित—मौलाना;
बात पुरानी चली आ रही,
सबने ही इसको माना।
मगर जहाँ में सच्चे रिश्ते
हैं तो बस इतने ही हैं;
पीरे-मुग़ाँ[1], सुराही, साग़र,
मैकश[2], साक़ी, मयख़ाना॥

१. शराबख़ाने का बूढ़ा प्रबन्धक २. शराबी।

पीर, पादरी, ज्ञानी, पंडित,
मोमिन[1] वाहज़, मौलाना;
पिया सभी ने ही छक-छक
कर, अपना-अपना पैमाना।
किया तसव्वुर[2] सबने ही
मुख्तलिफ[3], एक ही साक़ी का;
राहें जुदा-जुदा हैं लेकिन,
मंजिल सबकी मयखाना॥

१. ईमान पर चलने वाला २. कल्पना ३. भिन्न-भिन्न रूप में।

वचा रहेगा मयख़ाने में
अगर एक भी पैमाना,
बाक़ी रहा ज़माने भर में
अगर एक भी दीवाना।
दस्ते-साक़ी[1] में भी ग़र, थोड़ा
सा दम बाक़ी रहता,
फिर भी रवाँ रहेगा यूँ ही,
बिना रुके यह मयख़ाना॥

१. साक़ी का हाथ।

पहलू में हरदम साक़ी है
और लबों पर पैमाना,
ग़महाये - आलम[1] से बचकर,
रहता हरदम मस्ताना।

देखे थे कल रात ख्वाब में
साक़ी, मीना[2], पैमाने,
आँख खुली तो पाया मैंने,
अपने आगे मयख़ाना॥

१. सांसारिक दुःख २. शराब की बोतल।

रहा करेगा हर इन्साँ जब
मय पी-पीकर मस्ताना.
अहले-जन्नत[1] को भी जब
ललचायेगा यह पैमाना।
जब कोई भी ज़ाहिद[2]-वाइज़
नहीं रहेगा दुनिया में,
सिर्फ उसी दिन का ही है
अब तलक मुन्तज़िर[4] मयख़ाना॥

१. स्वर्गवासी २. परहेज़गार ३. उपदेशक ४. प्रतीक्षा में।

मुद्रक—एम० जे० प्रेस, आगरा।